इस फांस में सिर्फ जिंदगी ही नहीं, बहुत कुछ

'फांस' उपन्यास में विदर्भ के उन किसान परिवारों की कहानी कही गई है, जिन्होंने खेती में कर्ज बढ़ जाने पर निराश होकर आत्महत्या कर ली। यह उपन्यास हमारी कृषि नीति पर एक बड़ा सा सवालिया निशान छोड़ता है।

फांस (उपन्यास)
लेखक- संजीव
प्रकाशक- वाणी प्रकाशन
200 रुपये

अशोक मिश्र

संजीव का नया उपन्यास 'फांस' महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आवासीय लेखक के रूप में एक वर्षीय प्रवास के दौरान लिखा गया था। हम कह सकते हैं कि देश में विकास का सूचकांक चाहे जितना चमक रहा हो, लेकिन वर्धा के किसानों की दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा है। वर्धा में कपास और गन्ना दोनों की ही खेती के लिए मौजूद सिंचाई के अत्यल्प साधनों के मध्य खेती किसानों के लिए लगातार घाटे का सौदा बनती जा रही है। प्रेमचंद के समय से ही किसानी घाटे का सौदा रही है, इसके बावजूद आखिर किसान खेती न करें, तो जीविका के लिए क्या करे। इन पंक्तियों का लेखक भी इत्तेफाक से विदर्भ के वर्धा जिले में रहता है, जहां लगभग हर दिन अखबार के पहले पेज पर ही किसान आत्महत्या की खबर प्रमुखता से छपती रहती है। समूचे विदर्भ के हर गांव में किसान परिवारों की यही कहानी है। केंद्र सरकार की नीतियां आखिर क्यों किसानों को आत्महत्या की ओर धकेल रही हैं या इसके पीछे की क्या वजहें हैं, इसकी तलाश ईमानदारी से नहीं की जाती है। यदि की गई होती तो जाहिर है कि आज हम किसानों को खुशहाल देखते। किसान को देश का अन्नदाता कहा जाता है।

पिछले पंद्रह बरसों के दौरान देश के किसानों में आत्महत्या की प्रवृत्ति में काफी इजाफा हुआ है। आंध्र के तेलंगाना, बुंदेलखंड, विदर्भ, छत्तीसगढ़ के किसान परिवारों की कमोबेश यही कहानी है। कथाकार संजीव ने 'फांस' उपन्यास में विदर्भ के उन किसान परिवारों की कहानी कही है, जिन्होंने खेती में कर्ज बढ़ जाने पर निराश होकर आत्महत्या कर ली। ऐसे किसान परिवारों के बीच घूम-घूमकर कथाकार ने उनके दुःख दर्द और जमीनी हकीकत, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सच्चाई को देखा, समझा और उनकी पीड़ा को शब्दों और पात्रों के जरिए उपन्यास में कही है। कथाकार ने उदारीकरण के बाद हमारी सरकारें किसके हित में काम कर रही है, यह साफ-साफ दर्शाया है। खाद, बीज, सिंचाई महंगी होने के साथ-साथ कीटनाशकों की अच्छी खासी लागत के बाद किसान को फसल से मुनाफा तो दूर की बात है, लागत ही नहीं निकल पाती। किसान के परिवार को भी बच्चों की शिक्षा, पालन, शादी पर खासा धन खर्च करना पड़ता है। दूसरी ओर समाज में मोटरसाइकिल, कार, टीवी और अच्छा पहनावा किसान का परिवार भी हासिल करना चाहता है। कारण साफ है वह भी इसी समाज में रहता है। वैश्वीकरण की नीतियां किसानों को क्यों नहीं लाभ पहुंचा रही हैं? ऐसा सिर्फ किसानों के साथ क्यों हो रहा है? बाजार में ही कृषि उत्पादों की दलाली करने वाले मालामाल हैं, जबकि किसानों के हाथ खाली हैं। संजीव का 'फांस' उपन्यास हमारी कृषि नीति पर एक बड़ा सा सवालिया निशान छोड़ता है और किसानों की ओर ध्यान भी आकर्षित करता है।

पुस्तक